अनुवाद : अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

प्रो शैलेंद्रकुमार शर्मा

एम ए हिंदी द्वितीय सेमेस्टर

ECT – 2 (चतुर्थ प्रश्नपत्र)

(1) प्रयोजनमूलक हिंदी

अनुवाद : अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

प्रो शैलेंद्रकुमार शर्मा

किसी भाषा में कही या लिखी गयी बात का किसी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन अनुवाद (Translation) कहलाता है। अनुवाद का कार्य बहुत पुराने समय से होता आया है। संस्कृत में 'अनुवाद' शब्द का उपयोग शिष्य द्वारा गुरु की बात के दुहराए जाने, पुनः कथन, समर्थन के लिए प्रयुक्त कथन, आवृत्ति जैसे कई संदर्भों में किया गया है। अनुवाद की व्युत्पत्ति इस प्रकार की गई है :

अनु+ वद् + घञ् = अनुवाद

इस व्युत्पत्ति के अनुसार अनु उपसर्गपूर्वक वद्' धातु से 'अनुवाद' शब्द का निर्माण हुआ है। 'वद्' का अर्थ है बोलना। 'वद्' धातु में 'अ' प्रत्यय जोड़ देने पर भाववाचक घञ् में इसका परिवर्तित रूप है 'वाद' जिसका अर्थ है- 'कहने की क्रिया' या 'कही हुई बात'। 'वाद' में 'अनु' उपसर्ग जोड़कर 'अनुवाद' शब्द बना है, जिसका अर्थ है, पुनः कथन या पुनरुक्ति अर्थात प्राप्त कथन को पुनः कहना। यह क्रिया उसी भाषा में होती थी। शब्दार्थ चिंतामणि कोश के अनुसार, प्राप्तस्य पुन: कथने अर्थात जो प्राप्त या ज्ञात है, उसे पुन: कहना। अब इसे नया अर्थ मिला है। अब इसका मतलब एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में ले जाना हो गया है।

अंग्रेजी में प्रचलित Translation शब्द की उत्पत्ति लेटिन के Trans+Latum से हुई है। फ्रेंच में translation का अर्थ है एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना अर्थात् पारवहन। और यही अंग्रेजी में Trans- का अर्थ है Across- जिसका अभिप्राय अर्थात दूसरी ओर Latun Lation अर्थात् Lation का अभिप्राय To carry अर्थात् ले जाना। इस तरह इसका सीधा अर्थ हुआ "इस ओर से दूसरी ओर ले जाना।" अत: यह कहा जा सकता है कि एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कहना अनुवाद है। अनुवाद का सम्बंध दो भाषाओं से है:

Source language – Receptor / Target language

स्रोत भाषा - लक्ष्य भाषा

अनुवाद के पूर्ण स्वरूप को समझने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ देखी जा सकती हैं:

(क) पाश्चात्य चिन्तन

नाइडा : Translation consists in producing in the receptor language the closest natural equivalent to the massage of the source language, first in the meaning and secondly in style.

'अनुवाद का तात्पर्य है स्रोत-भाषा में व्यक्त सन्देश के लिए लक्ष्य-भाषा में निकटतम सहज समतुल्य सन्देश को प्रस्तुत करना। यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है फिर शैली के स्तर पर।'

जॉन कनिंगटन : 'लेखक ने जो कुछ कहा है, अनुवादक को उसके अनुवाद का प्रयत्न तो करना ही है, जिस ढंग से कहा, उसके निर्वाह का भी प्रयत्न करना चाहिए।'

कैटफोर्ड : The replacement of textual material in one language by equivalent textual material in another language.

'एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्य सामग्री से प्रतिस्थापना ही अनुवाद है।'

अनुवाद में तीन पक्ष महत्त्वपूर्ण हैं: 1.मूल-भाषा (भाषा) 2. मूल भाषा का अर्थ (संदेश) 3. मूल भाषा की संरचना (प्रकृति)

सैमुएल जॉनसन : 'मूल भाषा की पाठ्य सामग्री के भावों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदल देना अनुवाद है।'

फॉरेस्टन : 'एक भाषा की पाठ्य सामग्री के तत्त्वों को दूसरी भाषा में स्थानान्तरित कर देना अनुवाद कहलाता है। यह ध्यातव्य है कि हम तत्त्व या कथ्य को संरचना (रूप) से हमेशा अलग नहीं कर सकते हैं।'

हैलिडे : 'अनुवाद एक सम्बन्ध है जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है, ये पाठ समान स्थिति में समान प्रकार्य सम्पादित करते हैं।'

न्यूमार्क : 'अनुवाद एक शिल्प है, जिसमें एक भाषा में व्यक्त सन्देश के स्थान पर दूसरी भाषा के उसी सन्देश को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।'

इस प्रकार नाइडा ने अनुवाद में अर्थ पक्ष तथा शैली पक्ष, दोनों को महत्त्व देने के साथ-साथ दोनों की समतुल्यता पर भी बल दिया है। जहाँ नाइडा ने अनुवाद में मूल-पाठ के शिल्प की तुलना में अर्थ पक्ष के अनुवाद को अधिक महत्त्व दिया है, वहीं कैटफोड अर्थ की तुलना में शिल्प सम्बन्धी तत्त्वों को अधिक महत्त्व देते हैं।
सैमुएल जॉनसन ने अनुवाद में भावों की रक्षा की बात कही है, तो न्यूमार्क ने अनुवाद कर्म को शिल्प मानते हुए निहित सन्देश को प्रतिस्थापित करने की बात कही है।
कैटफोड ने अनुवाद को पाठ सामग्री के प्रतिस्थापन के रूप में परिभाषित किया है। उनके अनुसार यह प्रतिस्थापन भाषा के विभिन्न स्तरों (स्वन, स्वनिम, लेखिम), भाषा की वर्ण सम्बन्धी इकाइयों (लिपि, वर्णमाला आदि), शब्द तथा संरचना के सभी स्तरों पर होना चाहिए। नाइडा, कैटफोड, न्यूमार्क तथा सैमुएल जॉनसन की उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट हो जाता है कि अनुवाद एक भाषा पाठ में व्यक्त (निहित) सन्देश को दूसरी भाषा पाठ में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया का परिणाम

है। हैलिडे अनुवाद को प्रक्रिया या उसके परिणाम के रूप में न देख कर उसे दो भाषा-पाठों के बीच ऐसे सम्बन्ध के रूप में परिभाषित करते हैं, जो दो भाषाओं के पाठों के मध्य होता है ।

(ख) भारतीय चिन्तन

देवेन्द्रनाथ शर्मा : 'विचारों को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना अनुवाद है।'

भोलानाथ तिवारी : 'किसी भाषा में प्राप्त सामग्री को दूसरी भाषा में भाषान्तरण करना अनुवाद है, दूसरे शब्दों में एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथा सम्भव और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास ही अनुवाद है।'

पट्टनायक : 'अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सार्थक अनुभव (अर्थपूर्ण सन्देश या सन्देश का अर्थ) को एक भाषा-समुदाय से दूसरी भाषा-समुदाय में सम्प्रेषित किया जाता है।'

विनोद गोदरे : 'अनुवाद, स्रोत-भाषा में अभिव्यक्त विचार अथवा व्यक्त अथवा रचना अथवा सूचना साहित्य को यथासम्भव मूल भावना के समानान्तर बोध एवं संप्रेषण के धरातल पर लक्ष्य-भाषा में अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया है।'

रीतारानी पालीवाल : 'स्रोत-भाषा में व्यक्त प्रतीक व्यवस्था को लक्ष्य-भाषा की सहज प्रतीक व्यवस्था में रूपान्तरित करने का कार्य अनुवाद है।'

दंगल झाल्टे : 'स्रोत-भाषा के मूल पाठ के अर्थ को लक्ष्य-भाषा के परिनिष्ठित पाठ के रूप में रूपान्तरण करना अनुवाद है।'

बालेन्दु शेखर तिवारी : अनुवाद एक भाषा समुदाय के विचार और अनुभव सामग्री को दूसरी भाषा समुदाय की शब्दावली में लगभग यथावत् सम्प्रेषित करने की सोद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है।'

अनुवाद की विभिन्न परिभाषाओं के आधार पर इसके विभिन्न सिद्धांत विकसित हुए हैं। इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि अनुवाद की परिकल्पना में स्रोत-भाषा की सामग्री लक्ष्य-भाषा में उसी रूप में, सम्पूर्णता में प्रकट होती है। सामग्री के साथ प्रस्तुति के ढंग में भी समानता हो। मूल-भाषा से लक्ष्य-भाषा में रूपान्तरित करने में स्वाभाविकता का निर्वाह अनिवार्यत: हो। और लक्ष्य-भाषा में व्यक्त विचारों में ऐसी सहजता हो कि वह मूल-भाषा पर आधारित न होकर स्वयं मूल-भाषा होने का एहसास पैदा करे। हम यह भी लक्ष्य करते हैं कि लगभग सभी परिभाषाओं में अनुवाद-प्रक्रिया को शामिल किया गया है। इन सभी परिभाषाओं के आधार पर 'अनुवाद' को निम्नलिखित शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है।

'अनुवाद, मूल-भाषा या स्रोत-भाषा में निहित अर्थ (या सन्देश) और शैली को यथा सम्भव सहज समतुल्य रूप में लक्ष्य-भाषा की प्रकृति और शैली के अनुरूप परिवर्तित करने की सोद्देश्य प्रक्रिया है।'

श्रेष्ठ अनुवाद के लिए जरूरी है कि अनुवादक में कुछ विशेष प्रकार की प्रतिभा, ज्ञान और कौशल हो। एक अच्छा अनुवादक वह है, जो स्रोत भाषा (जिससे अनुवाद करना है) के लिखित एवं वाचिक दोनों रूपों का अच्छा ज्ञाता हो। वह लक्ष्य भाषा (जिसमें अनुवाद करना है) के लिखित रूप का अच्छा ज्ञाता हो। वह पाठ जिस विषय का है, उसकी जानकारी रखता हो। स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा के सम्यक् ज्ञान और विषय के सम्यक् ज्ञान के साथ सतत अध्ययनशीलता एवं अभ्यास जरूरी है। तभी अनुवाद कार्य परिपूर्ण हो सकता है।

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि अनुवाद एक सतत अभ्यास की प्रक्रिया है। इसमें जो जितना अभ्यासरत होगा वह उतना ही अधिक सफल एवं कुशल अनुवादक होगा। संसार भर की भाषाओं में अनुवाद की कई शैलियाँ और प्रविधियाँ अपनाई गई हैं, लेकिन यदि अनुवादक सावधानीपूर्वक शब्द और भाव की आत्मा का स्पर्श करते हुए स्रोत भाषा के कथ्य को लक्ष्य भाषा में उसकी प्रकृति के अनुरूप अनुवाद उपस्थित करे तो यही आदर्श अनुवाद होगा। इसीलिए श्रेष्ठ अनुवादक को ऐसा कुशल चिकित्सक कहा जाता है, जो शीशी में रखी दवा को अपनी सिरिंज के द्वारा रोगी के शरीर में यथावत् पहुँचा देता है।

प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष

हिंदी अध्ययनशाला

कुलानुशासक

विक्रम विश्वविद्यालय,

उज्जैन (म.प्र.) 456010

मो. 9826047765

email : shailendrasharma1966@gmail.com